ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-9* October (Part-1) 2021
Innovation The Research Concept

लोकोन्मुखता एवं पारिस्थितिकी के कविः त्रिलोचन

Poet of Democracy and Ecology: Trilochan

Paper Submission: 10/10/2021, Date of Acceptance: 20/10/2021, Date of Publication: 24/10/2021

गीता पाण्डे
एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग
एस0डी0पी0जी0 कॉलेज,
गाजियाबाद,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

त्रिलोचन की कविताओं को पढ़ने का मतलब है, जीवन की सच्चाईयों से वाकिफ होना, अपने समय की पूर्णता को जीना, 'धरती' कवि का प्रथम कविता संग्रह है, जो सन् 1945 में छपा आजाद भारत का सपना उनकी कविताओं से देखा जा सकता है। त्रिलोचन की लोकोन्मुखता प्रकृति, ऋतु सौंदर्य, जीवन के अनेक रंगो के मध्य विराजती हैं, वहीं परिस्थितिकी की इतनी भरमार हैं कि वहां समाज, धर्म, विश्वास, भूख, बेरोजगारी की स्थितिया भी मुंह बांए खड़ी रहती हैं। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि विभिन्न स्थितियों के बावजूद कविताएं सच्चाई से खड़ी रहती हैं, टूटती नहीं हैं, निराशा नहीं परोसती है, अर्थ ही नहीं प्रस्तुत करतीं पूरा वातावरण उकेर लाती हैं। त्रिलोचन अपनी कविताओं में जीवन संघर्ष की बात करते हैं जहां आदर्श दूर-दूर तक नहीं दिखते हैं और भावनाओं का अतिरेक भी नहीं झलकता।

सामाजिकता से ओत-प्रोत उनकी कविताओं में व्यक्तिगत जीवन भी प्राप्त होता है, आडम्बरविहीन, दबंग कवि का नाम ही त्रिलोचन शास्त्री है।

Reading Trilochan's poems means being aware of the realities of life, living to the fullest of our times, 'Dharti' is the poet's first collection of poems, which can be seen from his poems, published in 1945, the dream of independent India. Trilochan's people-oriented nature, seasonal beauty, resides in the midst of many colors of life, while the ecology is so full that the conditions of society, religion, faith, hunger, unemployment also stand left. It is an important fact that in spite of various situations, poems stand by the truth, do not break, do not serve despair, do not present meaning, they bring out the whole atmosphere. Trilochan talks about the struggle of life in his poems where ideals are not far-fetched and there cannot be an excess of emotions.

Personal life is also found in his poems, full of sociality, the name of the pompous, domineering poet is Trilochan Shastri.

मूलशब्द; लोकोन्मुखता एवं पारिस्थितिकी के कविः त्रिलोचन।
Keywords: Poet of Democracy and Ecology: Trilochan.

प्रस्तावना

त्रिलोचन जैसे कवि को समझने के लिए उनके समय और उनकी परिस्थितियों को समझना जरूरी होगा, एक कवि अपने समय की जमीन में टिका रहकर इतना महत्वपूर्ण, इतना अलग कैसे बन जाता है कि वह अपने संघर्ष, अपनी जनपदीयता के जुड़े पहलुओं को लेकर कविता को अपनी ताकत बनाकर चलता है, उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जिले की कादीपुर तहसील के एक गांव से निकला हुआ एक कवि लोक-काव्य के विभिन्न रूपों की जड़ों को आत्मसात् करते हुए साहित्य रचना के गम्भीर पहलुओं की ओर प्रवृत्त होता है, विषय-चयन, शिल्प और प्रस्तुतीकरण में अपना अलग अंदाज रखता है, आधुनिकता के जितने भी प्रचलित रूप माने गए हैं वह उनको भी अस्वीकार कर जाता है और बावजूद इसके वह आधुनिक भी कहा जाता है, बात बिल्कुल साफ है कि त्रिलोचन में ऐसा बहुत कुछ है जो उन्हें यह व्यक्तित्व प्रदान करता है और उनके कृतित्व को समझने की दिशा में जिज्ञासा प्रदान करता है।

त्रिलोचन का प्रथम काव्य संग्रह 'धरती' सन् 1945 में आया, उन्होंने अपनी किसी भी कविता में लिखने की तिथि नहीं अंकित की है तथापि एक लम्बा काव्य-सफर उन्होनें तय किया है जिसमें गुलाब और बुलबुल (गजल, रूबाईयंा), 'दिगन्त', 'ताप के ताए हुए दिन', 'शब्द', 'उस जनपद का कवि हूँ, 'फूल नाम है एक', 'अरघान', 'अनकही भी कुछ कहनी है', 'सबका अपना आकाश', 'तुम्हें सौंपता हूँ', 'मेरा घर', 'जीने की कला', 'चैती' तथा 'अमोला' (अवधी में लिखा बरवै संग्रह) आएं हैं।

त्रिलोचन हिन्दी काव्य जगत् में एक ऐसे कवि के रूप में दिखाई देते हैं, जो कविता में स्वयं को रखकर देखते हैं। अपनी अच्छी-बुरी बातों को कहते हैं, अभिजात्यवादी कवियों के समाज से अलग एक ऐसा रास्ता चुनते हैं जहां वे ईमानदारी से दिखते हैं, अपने पूरे वजूद के साथ प्रस्तुत होते हैं, इस प्रक्रिया में वे अपने वस्त्रों के मैलेपन या फटेपन को भी कुछ इस शान से प्रस्तुत करते हैं कि उन जैसे लोगों पर दया न की जाएं और वे इस माध्यम से यह बताना चाहते हैं कि वे किस वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। वस्तुतः कहने का अभिप्राय है कि त्रिलोचन छिपाना और ढांकना दोनों ही नहीं जानते, अपनी मिटटी की बात करने पर वे फक्र महसूस करते हैं, उनकी दुनिया उनके क्षेत्र की दुनिया हैं, जहां वे परिवेश, प्रकृति, जनभाषा, उस सोच को रखते हैं जहां उनकी कविता में अनेक अर्थ नहीं मिलते, बौद्धिकता नहीं मिलती और सबसे अहं बात तो यह भी है कि वहां भावुकता जैसी स्थितिया भी नहीं मिलती हैं एक प्रकार का फक्कड़ अंदाज, अव्यवहारिकता लेकिन आत्म विश्वास भरपूर दिखाई पड़ता है, दरअसलः इस तरह का

लेखक न तो स्वयं को किसी परम्परा से जोड़ता है लेकिन भाव एवं अभिव्यक्ति के नए द्वार वह खोल देता है। आत्मचर्चा कर बैठता है, कुछ इस तरहः

"बिस्तरा है न चारपाई है। जिन्दगी खूब हम ने पाई है। अब तो जैसी भी आए सहना है। दिल से आवाज ऐसी आई है। ठोकरें दर-ब-दर की थीं, हम थे। कम नहीं हमने मुंह की खाई है। कच्चे ही हो अभी त्रिलोचन तुम / धुन कहां वह संभल के आई हैं।"[1]

अपने संघर्षपूर्ण जीवन को उन्होनें अध्ययन करने में बिताना, घुमन्तू प्रवृत्ति के होने के कारण गांव से निकलकर जिले, जिले से शहर-शहर भटकते रहे और क्षेत्र-क्षेत्र की बोलियों, शब्दों और उनकी बारीकियों को उन्होनें समझा त्रिलोचन की भाषा और संवेदना के स्तर पर विविधता आने का यही कारण रहा, अरबी-फारसी, संस्कृत के वे जानकार रहे, पश्चिमी सॉनेट को उन्होंने अपनाया और गजल तथा रूबाईयों के संग्रह निकालने के पश्चात् सॉनेट का संकलन 'दिगन्त' नाम से 1957 में प्रकाशित किया, सॉनेट के लिए उनके द्वारा रोला छन्द का प्रयोग हुआ, सॉनेट के लिए त्रिलोचन कहते रहे हैं कि उन्होनें पश्चिमी काव्य पद्धतियों का बारीकी से अनुशीलन किया है, उनके सॉनेट चौबीस मात्राओं के अनुशासन में लिखे प्राप्त होते हैं, जहां लय का भी ध्यान रखा गया है, लोक-जीवन से जुड़े रहने के कारण उन्होनें अपने सॉनेट में सहजता, मधुरता का ध्यान रखा है लेकिन अनावश्यक भावुकता से वे सदैव बचे हैं जो उनके व्यक्तित्व का गुण भी नहीं है क्योंकि उनकी प्रत्येक अभिव्यक्ति उनके दृढ़ चिंतन का वजन लेकर आती है, वे संघर्ष के कवि हैं समझौते के कवि तो बिल्कुल भी नहीं।

त्रिलोचन की कविता उनके समय के भारत की कविताएं हैं, जिनमें परिवेश के नाम पर प्रकृति, ग्राम्य, परिवेश, जनपदीय बिम्ब तथा उनकी लम्बी कविताओं में ग्रामीण जन के चरित्र उकेरे गए हैं, जहां साफ बयानी है, प्रतीकों अथवा अपरोक्ष कथन को वहां स्थान प्राप्त नहीं हेाता है। प्रकृति-सान्निध्य की स्थितियों में लोक सौंदर्य परिलक्षित हेाता है जो कृत्रिमता से परे का उनका अनुभव है। वे अपने आस पास के परिवेश से संवाद बनाए रखने की स्थिति में आते हैं या कभी वे अपनी प्रकृति को भीतर से जाकर देखते हैं जहां कवि यह महसूस करने की स्थिति में आ जाता हैः

पीपल के पत्तों ने ज्यों मुंह खोला खोला
त्यों चटाक से लगा तमाचा आकर लू का
झेल गया वह भी आखिर बच्चा था भू का।[2]

उनके प्रथम कविता संग्रह 'धरती' में भी प्रकृति प्रेम सहेज कर रखा गया है। कवि यदि किसान हैं तो वनस्पतियों और मिटटी से उसका जुड़ाव होना स्वाभाविक ही है, मौसम का बदलना, पेड-पौधों की गंध को महसूस करना, शारीरिक श्रम करना, अपने समय के हिसाब से एक कठिन जिन्दगी को तय करना वह अपनी रचनाधर्मिता में भूल नहीं पाता है, यही कारण है कि ऐसी रचनाओं की ताजगी आज भी बनी हुई है। आंचालिकता की पक्षधर बनती उनकी कविताएं तीज-त्योहार, सांस्कृतिक विरासत को साथ लेकर आती हैं, जहां कण्डे पाथती औरतें, खेत में काम करती औरतें, परस्पर संवादों में पारदर्शिता रखता ग्रामीण समाज लोकोन्मुखी ऊर्जा लेकर खड़ा होता है। कभी कभार तो प्रतीत होता है वे अवध प्रान्त की आवाज है। 'उस जनपद का कवि हूँ' की कविताएं इस ओर ध्यान आकृष्ट कराती हैं। दरअसल कवि की ऊँचाई देखने का मापदण्ड ही उनकी आंचलिकता-लोकोन्मुखता हैं जहां वे अपने अभिजात्यावादी कवियों से काफी आगे निकल जाते हैं और स्वयं को अपने समय के सच्चे हस्ताक्षर बना जाते हैं।

भाव और भाषा का अद्भुत समन्वय त्रिलोचन की कविता में प्राप्त होता है, भाव और भाषा की गत्यात्मकता बनी रहती है, कई बार पाठक के समक्ष चित्र सा खींच जाता है। इस प्रकार -

हो ग या चि त्र प ट पू र्ण ग ग न
छ वि रू प वर्ण - म य चं च ल घ न
प ल में कु छ प ल में कु छ ब न ब न
क्ष ण क्ष ण में प्रि य त र, सु न्द र त र[3]

यहां पर त्रिलोचन की दो लम्बी कविताओं का इस संदर्भ में जिक्र करना आवश्यक हो जाता है, ये कविताएं हैं क्रमशः 'नगई महरा' तथा 'चम्पा काले अक्षर नहंी चीन्हती'। ये दोनों कविताएं ग्रामीण कलेवर का पूरा पूरा चित्र सौंपती हैं। चम्पा के माध्यम से वे एक ग्रामीण उस स्त्री का चित्रण करते हैं जो पढ़ी-लिखी नहीं हैं लेकिन व्यवहारिक पूरी समझ रखती हुई वह स्त्री है, उसे अपनी मिट्टी से प्रेम है वह अपनी दुनियं ा से बाहर नहीं जाना चाहती है, उसका संवाद कविता में कुछ इस तरह से दीख पड़ता है-

मैंने कहा कि चंपा, पढ़ लेना अच्छा है
ब्याह तुम्हारा होगा, तुम गौने जाओगी,
चंपा बोलीः तुम कितने झूठे हो, देखा,
कलकत्ता में कभी न जाने दूंगी
कलकत्ते पर बजर गिरे।[4]

चम्पा कलकत्ते जाने की पक्षधर नहीं हैं, कलकत्ता यांनि कि उस समय की नजदीकी काम काज ढूंढने की जगह, इस बहाने त्रिलोचन भी अपनी मंशा बता जाते हैं कि वे भी अपनी मिटटी के हिमायती हैं, पश्चिम की अंधी औद्योगिकता भरी जिन्दगी का वे भी कहीं न कहीं विरोध ही करते हैं। 'कलकत्ता' यानिकि पूंजीवादी व्यवस्था का वे विरोध करते हैं, 'कलकत्ता पर बजर गिरे कहना ही एक स्त्री की मानसिकता और उसके प्रतिरोध का वाक्य है। यह कविता जितनी सीधी सरल दिखाई देती है, दरअसल उसकी कहन इस तरह से बिल्कुल भी नहीं हैं, भारतीय गावों की समस्या, वहां से पलायन की स्थितिया,

सहजता और सरलता को मूल्यहीन करती हुई परिस्थितिया बदलते भारत की तस्वीर दिखा जाती है। कुल मिलाकर कविता आधुनिकता के विरूद्ध लगती हैं। यहां पर 'चम्पा' के बहाने कई-कई चम्पाएं खड़ी हो जाती हैं, जो इस स्थिति और मानसिकता को झेल रहीं होती हैं, वास्तव में यह कविता अपने आप में विशद व्याख्या की मांग रखती हैं।

लोकोन्मुखता की ओर अग्रसर कविता की एक अन्य कविता 'नगई महरा' है। यह चरित्र को उभारती कथात्मक कविता कही जा सकती है। नगई महरा इसका पात्र है, जिसके बहाने कवि ने अपनी बात रखी है, जिसके बहाने गांव की वनस्पतिया, मानसिकता, विडम्बनाएं, गांव के संघर्ष, ग्रामीण वर्ण व्यवस्था के चित्र, कार्यकुशलता देख पाते हैं, नगई की पीड़ा कई अर्थों में प्रकट होती है लेकिन भावुकता की जमीन को वह छू तक नहीं पाती, कवि ने विडम्बना में भी व्यंग्य की स्थिति रखी है। दया-भाव आने की स्थिति बिल्कुल भी नहीं। इस कविता का प्रारम्भिक प्रारूप देखिएः

"नगई कहार था। अपना गांव छोड़कर / चिरानी पटटी आ बसा, पूरब की ओर जहां बाग या जंगल था। बाग में। पेड़ आम जामुन या चिलबिल थे। जंगल में मकोय, हैंस, रिसबल की संवरें। झाड़िया झरवेरी की। और कई जाति की। ढेरे, कटार, ढाक, आछी, बबूल औ रेखां के। पेड़ भी जहां तहां खड़े थे।"

यह सही है कि त्रिलोचन भारतीय कवि हैं, हाशिए पर सांस लेती उस जनता के वे प्रतिनिधि बनकर सामने आते हैं, एक तरह से सर्वहारा जन का तादात्म्यपूर्ण दृष्टिकोण इनके यहां देखने को मिलता है, जो बौद्धिकता से बहुत फासला रखती हैं, जो देखा-वह लिखा कहने के साथ-साथ उनके लिए यह कहना समीचीन होगा कि जो लिखा वह महसूस भी किया, अपने आस पास के परिवेश की उपेक्षा नहीं की, न ही किसी प्रकार के कॉम्पलेक्स से भरी हुई कविताएं रखीं, न कविताओं में राजनीति की, न कविताओं से भावुकता उत्पन्न की, उन्होंनें अपनी इस प्रकार की कविताओं द्वारा मानवीय भाव सर्वप्रथम सामने रखा, काशी या चिरानीपट्टी तक ही उन्होनें अपनी इन कविताओं को नहीं लिया बल्कि मानवीय संघर्ष जहां-जहां मिले वहां वे उसके साथ हो लिए। सर्वहारा जन के उनके यहां बेशुमार चित्र मिलते हैं कोई क्षोभ नहीं, कोई दयाभाव नहीं न ही उनके माध्यम से क्रान्ति करने का भाव, न कोई राजनीति। अपने समय को अपनी रचना में पूरी प्रतिबद्धता से जीने वाले त्रिलोचन ने उपेक्षित जन को अपने साथी के रूप में प्रस्तुत किया, संवाद की प्रक्रिया जारी रखी, भले ही इस प्रक्रिया में उनकी भी अवहेलना हुई लेकिन उन्होनें जो देखा वह कहा और दबंगई से कहा क्योंकि यही उनका वास्तविक अंदाज थाः ढ़ाकों के पातों/ को थाली की मर्यादा देकर/ पहला घेरा तोड़ दिया।[6]

कवि त्रिलोचन का समय 'तार सप्तक' और 'नयी कविता' का समय रहा, वह कविता के लिए नए प्रयोग करने का समय था, नयी कविता की मान्यताएं कुछ अलग थी ऐसे समय में किसानों, मजदूरों, उपेक्षितों, मध्यवर्गीय समाज की चेतना को कविताओं में केन्द्रीय बिन्दु मानकर चलना वास्तव में एक चुनौतीपूर्ण स्थिति रही होगी, त्रिलोचन यहां पर डटे रहे वे नयी कविता के समय में भी गांव और सर्वहारा जन की बात उठाते रहे, ये चुनौती उठाते हुए कि वे उस भीड़ में शामिल नहीं हैं, जहां वे नए कहे जाएगें, उन्होनें समकालीन बोध को जारी रखा और अपनी आइडेंटिटी को बनाए रखा, वे इस रूप में बड़े हैं और अपने समय को कविता के नक्शे में छाप कर मुक्त हो गए, उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को पूर्णतया समझने हेतु निम्नांकित कविता दृष्टव्य हैं, जिसके आगे सारे शब्द बेमायना हो जाते हैंः

उस जनपद का कवि हूँ जो भूखा दूखा है
नंगा है, अनजान है, कला-नहीं जानता
कैसी होती है क्या है, वह नहीं मानता
कविता कुछ भी दे सकती है। कब सूखा है
उस के जीवन का सोता, इतिहास ही बना सकता है।
वह उदासीन बिल्कुल अपने से,
अपने समाज से हैः दुनिया को सपने से अलग नहंी मानता,
उसे कुछ भी नहीं पाता
दुनिया कहां से कहां पहुंचीः अब समाज में
वे विचार रह गए नहीं हैं, जिन को ढोता।[7]

अपने अन्तिम कविता संग्रह 'मेरा घर' में वयोवृद्ध कवि अपनी आस पास की दुनिया के साथ भरपूर जीते हुए 'पृथ्वी मेरा घर है/ अपने इस घर को / अच्छी तरह मैं नहीं जानता लिखकर चला जाता है, यह बड़प्पन, यह विनम्रता, यह स्पष्ट बयानी वस्तुतः त्रिलोचन शास्त्री जैसा कवि ही कर सकता है, अन्य कोई नहीं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध-पत्र 'लोकोन्मुखता एवं परिस्थितिकी के कवि त्रिलोचन एक महत्वपूर्ण कवि की चर्चा करता है, उनकी साहित्यिक उपलब्धियों की ओर मात्र संकेत-भर प्रस्तुत करने का लघु-प्रयास है। अपनी सांस्कृतिक परिस्थितियों के साथ मजबूती से खड़े हुए कवि की अनुभूतियों एवं अनुभवों को स्मरण रखने का क्रम है।

त्रिलोचन जैसे कवि के माध्यम से उनके विषय चयन, भाव एवं भाषा को समझने का अवसर प्राप्त होता है। संघर्षरत जीवन की भाषा अभिव्यक्ति का रूप पाकर कहीं सरल व कहीं माधुर्य किस प्रकार बन जाती है यह अक्सर उनके शब्द-चयन के अनुशासन से देखा जा सका है। अधुनिकता को स्वीकार न करने की स्थिति एवं व्यक्तित्व रखते हुए भी वे अपने अलग तेवर से आधुनिक राह के राहगीर बन जाते

हैं, इस प्रकार अपार संभावनाओं के कवि की पीड़ा और भाव एक अलग अंदाज में उनके विभिन्न सॉनेट में दिखाई पड़ जाते हैं। त्रिलोचन पर लिखने का तात्पर्य भारतीय कवि की आत्मा को समझना है, जिस प्रकार वे जन कवि हैं उसी प्रकार वह आज भी अपने सुधि पाठकों, आलोचकों साहित्य प्रवर्ग के मध्य खड़े अकेले कवि हैं। वस्तुतः उनके जैसा दूसरा अन्य कवि समानता अथवा तुलना की दृष्टि से दूसरा है ही नहीं।

निष्कर्ष

त्रिलोचन शास्त्री एक ऐसे कवि हैं जिन्होनें अपनी जमीन को सदा पकड़कर रखा, संस्कृति, लोक संस्कृति, लोक-भाषा से प्रभावित होती हुई उनकी कविता नए भाव उद्गारों को लेकर प्रकट हुई, गांव, शहर, महानगर तक का उन्होंने अपनी रचनाओं में फैलाव रखा। शहर में आकर भी वे अपने देहात को न भूले, आत्मचर्चा करना न भूले, अपने दैन्य एवं संघर्षशील जीवन की चर्चा करके वे कवि नहीं बने बल्कि एक फक्कड़ अंदाज और आत्माभिमान का स्वर लेकर वह सामने आए।

त्रिलोचन कठिनतम जीवन के सरल व्यक्ति हैं, जो लिखना सिखाते हैं, शब्दों का प्रयोग समझाते हैं, व्यापक जीवन दर्शन देते हैं, हिन्दी व्याकरण का मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। उनका विपुल साहित्य आज भी अपने पाठकों को चित्रमयता प्रदान करता हैं और जागरूक एवं संघर्षशील स्थिति में जयघोष का नारा सिखलाता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *त्रिलोचनः गुलाब और बुलबुल; पृ0 28-29, वाणी प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण-1985*
2. *त्रिलोचन शास्त्री, फूल नाम है एक, ट. 31, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।*
3. *त्रिलोचनः धरती, पृ0 29, नीलाभ प्रका0 इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1977*
4. *त्रिलोचनः चुनी हुई कविताएं - सं0 सुरेश सलिल, पृ0 318, मेधा बुक्स, दिल्ली प्रथम सं0 2010*
5. *त्रिलोचनः ताप के ताए हुए दिन, पृ0 64, संभावना प्रकाशन, हापुड़, प्रथम संस्करण 1980*
6. *'त्रिलोचनः उस जनपद का कवि हूँ, पृ0 32 राधा कृष्ण प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण 1981*
7. *त्रिलोचनः उस जनपद का कवि हूँ, पृ0 17, राधा कृष्ण प्रकाशन दिल्ली प्रथम संस्करण 1981*